ग़ज़ल -07

- रविशंकर श्रीवास्तव

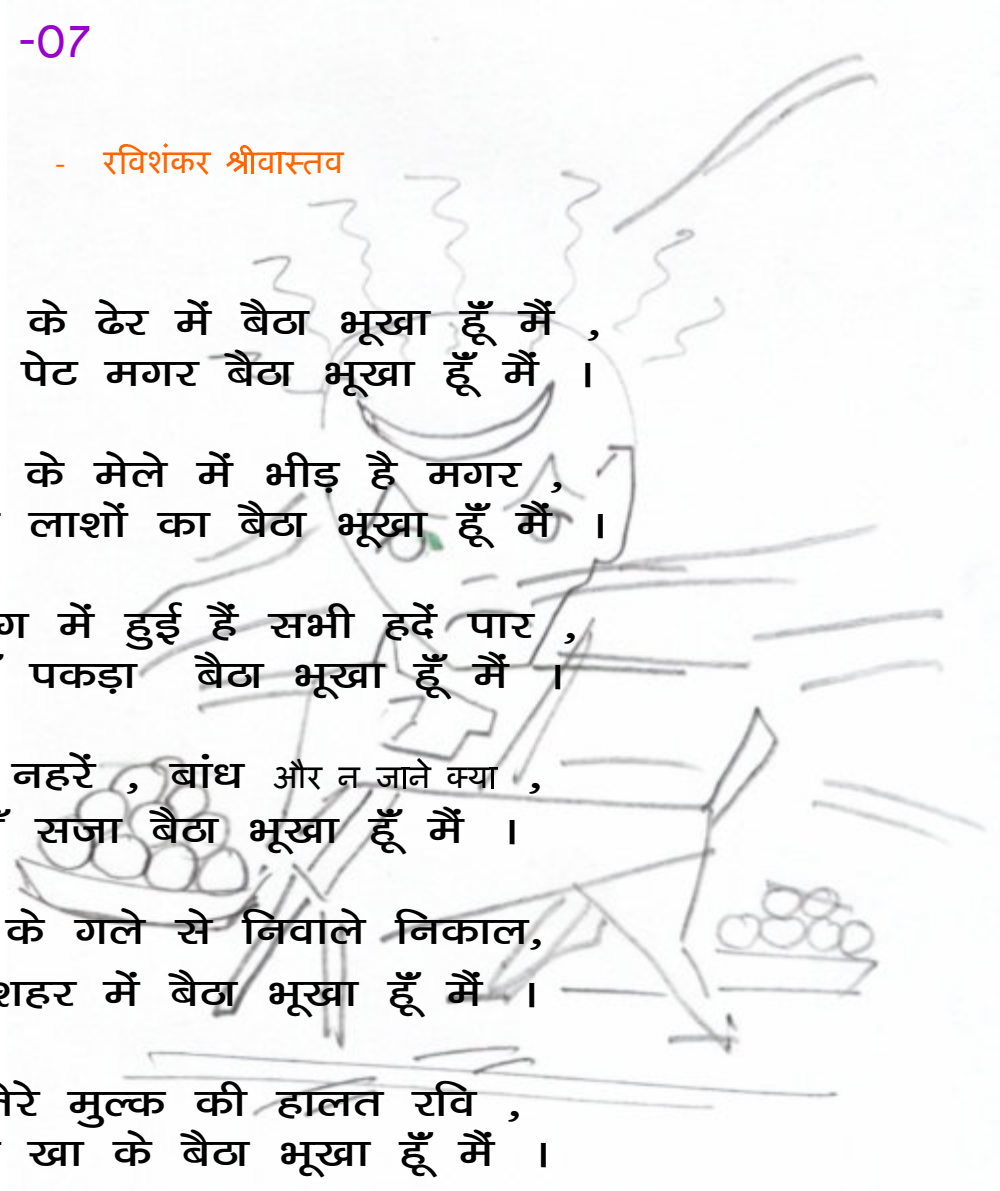

अनाजों के ढेर में बैठा भूखा हूँ मैं ,
भरा है पेट मगर बैठा भूखा हूँ मैं ।

जनाजों के मेले में भीड़ है मगर ,
बेगुनाह लाशों का बैठा भूखा हूँ मैं ।

इस जंग में हुई हैं सभी हदें पार ,
कुर्सियोँ पकड़ा बैठा भूखा हूँ मैं ।

सड़कें, नहरें , बांध और न जाने क्या ,
थालियाँ सजा बैठा भूखा हूँ मैं ।

ग़रीबों के गले से निवाले निकाल,
अमीर शहर में बैठा भूखा हूँ मैं ।

ये है तेरे मुल्क की हालत रवि ,
सबकुछ खा के बैठा भूखा हूँ मैं ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001